क्या आपने कभी अपने आप से पूछा है:
“क्या मैं उन लोगों में शामिल होऊँगा जो परमेश्वर के राज्य में अब्राहम के साथ बैठेंगे?”
यह केवल एक सुंदर आशा नहीं है; यह बाइबल की प्रतिज्ञा है। लेकिन कौन वहाँ बैठने योग्य होगा? यह आपकी पृष्ठभूमि, आपके पद या चर्च में बिताए वर्षों पर निर्भर नहीं करता।
कुंजी है—विश्वास। वह विश्वास जो अब्राहम के पास था।

1. अब्राहम का संतान होना क्या है?

अब्राहम का संतान होना मतलब है उसी विश्वास में चलना, जो अब्राहम की पहचान था।
परमेश्वर ने अब्राहम को इसलिए नहीं चुना क्योंकि वह सिद्ध या शक्तिशाली था—बल्कि इसलिए क्योंकि उसने विश्वास किया। उत्पत्ति 15:6 कहता है:

“अब्राम ने यहोवा पर विश्वास किया, और यहोवा ने उसे धार्मिकता में गिना।”

यह पहली बार है जब हम देखते हैं कि धार्मिकता कामों से नहीं, बल्कि विश्वास से मिलती है।

गलातियों 3:7 में पौलुस लिखता है:

“इसलिए जान लो कि जो विश्वास से हैं वही अब्राहम की सन्तान हैं।”

2. अब्राहम का विश्वास स्वाभाविक से परे था

अब्राहम ने केवल आसान समय में ही विश्वास नहीं किया। उसका विश्वास असंभव परिस्थितियों में भी दृढ़ रहा।

परमेश्वर ने उसे पुत्र का वादा तब दिया जब वह लगभग सौ वर्ष का था—और उसने विश्वास किया।
और जब परमेश्वर ने उससे इसहाक को बलिदान करने की माँग की, तब भी वह डगमगाया नहीं।

इब्रानियों 11:17–19 में लिखा है:

“विश्वास से अब्राहम ने, जब उसकी परीक्षा हुई, इसहाक को चढ़ाया… क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर उसे मरे हुओं में
से भी जिलाने में सामर्थी है।”

यही है असाधारण विश्वास।
अब्राहम ने तर्क, भावनाओं और परिस्थितियों से ऊपर उठकर परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा किया।

3. वह विश्वास जिसने यीशु को चकित किया: रोमी सूबेदार

मत्ती 8:5–13 में हम एक रोमी सूबेदार को देखते हैं—एक गैर-यहूदी—जिसका विश्वास स्वयं यीशु को चकित कर देता है।

जब यीशु उसके दास को चंगा करने को उसके घर जाने लगे, तो उसने कहा:

“हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरे घर आए; परन्तु केवल
एक वचन बोल दे और मेरा दास चंगा हो जाएगा।” (मत्ती 8:8)

उसने यीशु के वचन के अधिकार पर भरोसा किया—बिना किसी भौतिक प्रमाण के।

यीशु बोले:

“मैं तुम से सच कहता हूँ, इस्राएल में भी मैंने ऐसा विश्वास नहीं पाया।” (मत्ती 8:10)

फिर यीशु ने भविष्यद्वाणी की:

“बहुत से लोग पूरब और पश्चिम से आएँगे और अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे… परन्तु राज्य
के पुत्र बाहर अन्धकार में डाले जाएँगे।” (मत्ती 8:11–12)

4. परमेश्वर हृदय को देखता है, धार्मिक पदवी को नहीं

यीशु की बात हमारे सभी पूर्वाग्रहों को चुनौती देती है।
कई बाहर के लोग—गैर-धार्मिक, उपेक्षित, साधारण लोग—परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे,
पर कुछ ऐसे लोग, जो सोचते थे कि उनका स्थान निश्चित है, बाहर पाए जाएँगे।

क्यों?

क्योंकि परमेश्वर हृदय के विश्वास को देखता है, न कि धार्मिक रीति-रिवाजों को (1 शमूएल 16:7)।

अब्राहम की तरह ही सूबेदार ने भी परमेश्वर को सामर्थी और विश्वासयोग्य माना।

5. बाइबल में और भी अद्भुत विश्वास के उदाहरण

यीशु ऐसे विश्वास पर विशेष प्रतिक्रिया देते थे:

• रक्तस्राव वाली स्त्री

उसने कहा:

“यदि मैं केवल उसके वस्त्र को छू लूँ, तो चंगी हो जाऊँगी।” (मत्ती 9:21)

उसने भीड़ या ध्यान की तलाश नहीं की—सिर्फ यीशु की सामर्थ पर भरोसा किया।

• कनानी स्त्री (मत्ती 15:21–28)

वह बार-बार आग्रह करती रही, और उसके दृढ़ विश्वास ने उसकी बेटी को चंगा कर दिया।

• जक्कई (लूका 19)

वह सिर्फ एक झलक पाने के लिए पेड़ पर चढ़ गया—और यीशु ने कहा:

“आज इस घर में उद्धार आया है।” (लूका 19:9)

इन सभी में एक बात समान थी:
उन्होंने परंपरागत रास्तों के बजाय विश्वास के साथ यीशु के पास पहुँचा।

6. केवल धार्मिक प्रणाली पर निर्भर मत रहो

आज कई लोग सोचते हैं कि परमेश्वर तक पहुँचने के लिए उन्हें किसी भविष्यद्वक्ता, पादरी या विशेष स्थान की आवश्यकता है।
वे किसी विशेष सभा या चमत्कारी व्यक्ति का इंतज़ार करते हैं।

पर बाइबल कहती है: परमेश्वर तुम्हारे बहुत निकट है (रोमियों 10:8):

“वचन तेरे निकट है, तेरे मुँह में और तेरे हृदय में…”

तुम्हें किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं है।
यीशु मसीह ही एकमात्र मध्यस्थ है (1 तीमुथियुस 2:5)।

तुम स्वयं परमेश्वर के पास आ सकते हो—सीधे।

7. चुनौती: क्या तुम परमेश्वर को सक्षम मानते हो?

जब कठिनाइयाँ आती हैं, तो तुम सबसे पहले कहाँ जाते हो— मनुष्यों के पास, या परमेश्वर को सक्षम मानते हो?

यदि तुम मानते हो कि परमेश्वर दूसरों को उपयोग कर सकता है, तो वह तुम्हें भी उपयोग कर सकता है।
यदि तुम विश्वास करते हो कि परमेश्वर किसी प्रचारक की प्रार्थना सुन सकता है, तो वह तुम्हारी प्रार्थना भी सुन सकता है।

इब्रानियों 11:6 कहता है:

“बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना असम्भव है;

क्योंकि जो उसके पास आता है, उसे विश्वास करना चाहिए कि वह है और वह अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है।”

समापन: आइए अब्राहम के विश्वास का अनुकरण करें

अंत में, यह धार्मिक चीज़ों के पास रहने की बात नहीं है— यह सच्चे विश्वास से भरे हृदय की बात है।

2 कुरिन्थियों 13:5 कहता है:

“अपने आप को जांचो कि क्या तुम विश्वास में बने हुए हो।”

आइए हम उस अब्राहमी विश्वास को अपनाएँ—
वह विश्वास जो परिस्थितियों से नहीं डगमगाता,
जो पहाड़ों को हटा सकता है,
और जो परमेश्वर को कहने पर मजबूर करता है:

“यह व्यक्ति मेरे राज्य में अब्राहम के साथ बैठेगा।”

परमेश्वर तुम्हें आशीष दे और तुम्हारे विश्वास को बढ़ाए। आमीन।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp